SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

महाकवि भवभूति प्रणीत महावीरचरितम् में अमात्य स्वरूप

संगीता आर्या, Ph. D., संस्कृत विभाग
राजकीय स्नात्तकोतर बांगड़, महाविद्यालय, पाली, राजस्थान, भारत
खुशवन्त माली, शोधार्थी, संस्कृत विभाग
जय नारायण व्यास विश्व विद्यालय, जोधपुर, राजस्थान, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
संगीता आर्या, Ph. D.,
खुशवन्त माली, शोधार्थी
E-mail : sangeetaarya1968@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 18/09/2024
Revised on : 20/11/2024
Accepted on : 29/11/2024
Overall Similarity : 01% on 21/11/2024

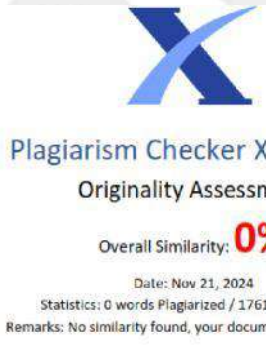

शोध सार

संस्कृत वांग्मय वैश्विक साहित्य में सर्वाधिक प्राचीनतम हैं। इसमें संस्कृत साहित्य वैदिक और लौकिक से द्विधा विभक्त हैं। लौकिक संस्कृत साहित्य भी दृश्य और श्रव्य से द्विधा हैं। दृश्य काव्य में नाट्य साहित्य अत्यंत रूचिप्रद और आनन्दजनक एवं शोक अमंगल का शमन करने वाला कहा गया हैं। महाकवि भास को प्रथम नाटककार तो महाकवि कालिदास को सर्वश्रेष्ठ नाट्यकार स्वीकार किया गया हैं। ''भासो हासः। कवि कालिदासः विलासः।'' महाकवि भास से अद्यावधि पर्यनत समस्त नाट्यकारों ने संस्कृत रूपकों में नाट्य के समस्त विषयों का सांगोपांग निदर्शन किया हैं। संस्कृत रूपकों के विषय यथा – प्रेम–प्रसंग, विवाह, प्रकृति चित्रण, नायक–नायिका विलास, युद्ध, द्यूतक्रीडा, राजनीति, कूटनीति, अमात्य, राज्यांग इत्यादि का यथार्थ समन्वित विशिष्ट वर्णन किया हैं। प्रस्तुत शोध्य विषय में रामायण आश्रित महाकवि भवभूति प्रणीत महावीरचरितम् रूपक में प्रसंग सह अमात्य विषयक राजनीतिक वर्णन अप्राप्य हैं किन्तु राक्षसराज रावण के प्रधान अमात्य 'माल्यवान्' एवं महाराज दशरथ के प्रधान अमात्य सुमन्त्र का पृथक स्वरूप निदर्शन प्राप्त होता हैं। लक्षण ग्रथों में प्राप्त अमात्य के गुणधर्मों को चरितार्थ करते हुए अमात्य माल्यवान राक्षसराज रावण के उत्कर्ष को सदैव सज्ज रहते हैं। अमात्य का यही परम कर्त्तव्य है कि सभी परिस्थितियों मे नायक/राजा का छायेव रक्षण, आज्ञापालन कर राजा एवं राज्य का मंगल करें। उच्च शिक्षित व श्रेष्ठ गुण सम्पन्न अमात्य माल्यवान के कौशल व ज्ञान से लोक के मंत्री देश के प्रत्येक क्षेत्र में आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक व न्यायिक उन्नति कर सकते हैं जिसकी आवश्यकता वर्तमान भारतीय समाज को हैं। शोध विषय में समादृत अमात्य माल्यवान के समस्त सम्पादित कर्त्तव्य कर्मों की जितनी प्रशंसा की

जाएं उतनी कम ही होंगी। वर्तमान के मंत्रियों हेतु वे एक आदर्श चरित्र है, जिनके कर्मों एवं आचरण से शिक्षा ग्रहण कर लोक के मंत्री राष्ट्र का हित चिन्तन कर सकते हैं।

मुख्य शब्द

महाकवि भवभूति, अमात्य, राष्ट्र.

रामायण आश्रित महाकवि भवभूति प्रणीत महावीरचरितम् रूपक में प्रसंग सह अमात्य विषयक राजनीतिक वर्णन अप्राप्य हैं किन्तु राक्षसराज रावण के प्रधान अमात्य 'माल्यवान्' एवं महाराज दशरथ के प्रधान अमात्य सुमन्त्र का पृथक स्वरूप निदर्शन प्राप्त होता हैं। यथाः

माल्यवान्: महाकवि भवभूति प्रणीत महावीरचरितम् नाटक में दशानन रावण के प्रधान अमात्य माल्यवान् का धार्मिक, राक्षसकुल व स्वामी उत्कर्ष हितेषी के रूप में विशिष्ट स्वरूप निदर्शन प्राप्य हैं। दशानन के कृत्यों से सदैव चिन्तित[1], अद्भुत धर्मरक्षक राम से अभिभूत धर्मद्रोही[2], दुर्धर्ष तप से दीप्त पौलस्त्य के हृदय की न्यूनता से खिन्न[3], दशानन के अपकर्ष एवं स्त्रीरत्न की उपेक्षा अप्रसन्न[4], ब्रह्मण उपद्रव त्याग हेतु प्रार्थना करने वाले परशुराम के मित्र[5], शैवमतावलंबी होने से जामदग्न्य द्वारा प्रेम[6], शिव धनुष भंग करने वाले रामादि के अहित चिन्तन कर्त्ता[7], रावण पराक्रम के कुशल चिन्तक[8], धर्मात्मा राम के संसार के स्वामी बनने के प्रति सशंकित[9], परशुराम को उत्तेजित करने के योजनाकार[10], देवताओं के राम विषयक ऐकमत्य के आश्चर्य से परिपूर्ण[11], मंथरा की देह में शूपर्णखा को प्रवेश करवा रामादि को वनवास की आज्ञा के निपुणयोजनाकर्त्ता[12], सीता अपहरण की छलबल योजनाकार[13], राम सह लक्ष्मण पर भी छलप्रयोग की योजना कर्त्ता[14], साम–दाम–भेद व दण्डादि नीति के निष्णाता व छद्मदण्ड को कर्त्तव्य रूप ग्रहण द्वारा राम को दमन की योजना कर्त्ता[15], रावण मित्र तथा अति–दुर्दान्त बाली से सन्धि द्वारा रामादि को वन में रोकने व युद्ध में समूल नाश के निपुण चिन्तक[16], राम को सहज व प्राकृत तथा समीपस्थ तृतीय नाती विभीषण को शत्रु मानने वाले[17], राक्षसकुल में परस्पर विभेद, वैमनस्य से रावण सुरक्षा प्रति सदैव सशंङ्क[18] तथा सभी प्रकार प्रकाशदण्ड, छद्मदण्ड, संरोधन व अपसरण के कुशल ज्ञाता, प्रयोक्ता व विभीषण को वश में करने हेतु चिन्तित[19], कुलीनों के आचारभिज्ञ[20], विभीषण–सुग्रीव मित्रता के दृष्टा व बंधुविग्रह से निर्भयी[21], बालि वध की सम्भावना पर राम–विभीषण मैत्री व एकवैव विभीषण के लंकाधिपति बनने के भविष्यवक्ता[22], कार्यवश विभीषण परित्याग स्वीकारकर्त्ता[23], रावण की अविनयनतरुका, विभीषण की रामादि से मैत्री व अक्षयकुमार वध से अत्यंत खिन्न, सचिन्त[24], राक्षसकुल के भविष्य प्रति चिन्तक व भाग्य की कुटिलता से अप्रसन्न[25], मन्त्रणा द्वारा राक्षसकुल को रक्षित करने वाले तथा अत्यंत कष्टदायी मन्त्रित्व अमात्य[26], रावणादि के मदान्ध यथेच्छ आचरण व भाग्य की प्रतिकूलता से खिन्न[27], अक्षयकुमार की मृत्यु व त्रिजटा के लंकादहन समाचार एवं हनुमान के लंका आगमन से अत्यंत शोक सन्तप्त[28], हनुमान–सीता भेंट से अतिचिन्तित व अतिप्रतापी हनुमान के प्रताप से खिन्न तथा सुग्रीव की प्रतापी वानर सेना से कंपित[29], सीता के पातिव्रत्य तेज प्रशंस्क व रावण कूकृत्यों से अत्यंत शोक सन्तप्त[30], रावण के प्रताप पर परम आसक्ति कर्त्ता[31], विभीषण की दूरदर्शिता में राक्षसकुल के एकमात्र उत्तराधिकारी रूप में शेष रहने को आश्वस्त[32], रावण की कलुषित बुद्धि से वृहद् अमंगल पर शोकमग्न[33], मन्दोदरी की दयालुता के प्रशंसक व रावण की नासमझी से चिन्तित[34], इत्यादि रूपों में अत्यंत महनीय, विशिष्ट, कुशलचिन्तक, योजनाकार, अप्रतिम स्वामीभक्त एवं सदैव स्वामी हितचिन्तक अमात्य माल्यवान् का स्वरूप निदर्शन वर्णित हैं।

वे राक्षसराज रावण के मातामह तथा प्रधान अमात्य हैं। उनका कुशल चिन्तन सदैव दशानन में रत रहता हैं। वे स्वर्ण लंका की दारूण विभीषिका के लिए सीताहरण को उत्तरदायी मानते हैं। इनकी योग्यता प्रशंसनीय है। इनके चार–गण सर्वत्र सतर्क तथा बुद्धिमान् है। माल्यवान् भविष्य की चिन्ता इतनी सावधानी से करते है कि इसके लिये उनको धन्यवाद दिया जाय तो कोई अतिशयोक्ति नही होंगी। राम–रावण युद्ध अभी बहुत दूर है परन्तु उसे उस समय की परिस्थिति का चित्र अङ्कित करके अपने सहकर्मियों को समझाना तथा तदनुसार आचरण करना है। बाली और परशुराम उसके मित्रपक्ष हैं, विभीषण खरदूषण आदि उसके अपने हैं, परन्तु इनके लिये भी उनकी सतर्कता बुद्धि का

प्रबल प्रकर्ष माना जायगा। उनके द्वारा की गई स्वपक्ष–परपक्ष विवेचना तथा राजनीतिक घात–प्रतिघात की समीक्षा अत्यन्त गम्भीर तथा विवेचनीय हुई है। प्रत्यासन्न शत्रु की परिभाषा में उन्होने अपनी चतुरता का विकास प्रामाणित किया है।

वे राम का वन में निर्वासन, यन्त्र– जानकी आदि का निर्माण उनकी राजनीतिक सूक्ष्मदर्शिता के उदाहरण हैं। रावण की दुर्नीति से जो विपत्ति आने को होती है उसका प्रतिकार वह पहले से करते है। रावण के उपाय और अपाय (विपत्ति) में उनकी तीक्ष्ण दृष्टि लगी रहती हैः

नैर्ऋताधिपकार्याणामुपायोपायकर्मणि।
आर्यो यन्माल्यवानास्तेऽव्यस्तलक्षेण चक्षुषा।।[35]

इस तरह उनकी विशिष्ट बुद्धिमत्ता सिद्ध होती है। बुद्धिमान् होने के साथ उसका आत्माभिमान भी सुरक्षित है, वह रावण की सेवा तो बड़ी लगन से करते है, परन्तु रावण के आलस्य, औद्धत्य, अविचार आदि उन्हें अच्छे नहीं लगते हैं, वह उसके लिये खेद ही प्रकट करते हैः

'साचिव्यं नाम महते सन्तापाय।
यत्किञ्चिद्दुर्मदाः स्वैरमाद्रियन्ते निरर्गलम्।
तत्र तत्र प्रतीकारश्चिन्त्यो वक्रे विधावपि।।[36]

रावण की वीरता पर उनको उतनी श्रद्धा नहीं है जितनी उन्हें अपनी बुद्धि पर विश्वास है। उनकी विद्याबुद्धि किसी भी मन्त्री के लिये अनुकरणीय तथा जो वर्तमान मंत्रियों के लिए राष्ट्र हित की साधिका होगी।

सुमन्त्रः महाकवि भवभूति प्रणीत महावीरचरितम् नाटक में महाराज दशरथ के प्रधान अमात्य व सुहृद सखा सुमन्त्र का स्वरूप निदर्शन वर्णित हैं। महाराज वशिष्ठ एवं विश्वामित्र भार्गव को दशरथ की आज्ञा से बुलाने वाले[37] इस प्रकार केवल एक बार संकेत रूप में अमात्य सुमन्त्र का स्वरूप प्राप्त होता हैं।

निष्कर्ष

संस्कृत वांग्मय में समादृत समस्त लक्षण ग्रंथों में राजा एवं नायक के उत्कर्ष सिद्धी हेतु सर्वाधिक सहयोगी अमात्य/मंत्री को बताया गया हैं। विवेच्य शोधपत्र में राक्षसराज रावण के प्रधान अमात्य माल्यवान तथा महाराज दशरथ के प्रधान अमात्य सुमन्त्र हैं। दोनों ही अपनी–अपनी कर्त्तव्यपरायणता, राष्ट्रभक्ति में आकण्ठ मग्न हैं। यदि दोनों को श्रेष्ठ अमात्य/मंत्री कहाँ जाए तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी।

दोनों के श्रेष्ठ व्यैक्तिक एवं चारित्रिक गुणों से लोक के मंत्रियों को कर्त्तव्य बोध हो सकेगा। अमात्य माल्यवान की नायक/राजा के प्रति उत्कर्ष की भावना अद्यावधि पर्यन्त मंत्रियों को प्रतिपल राष्ट्रभक्ति के भाव से सिंचित कर सकेगा। श्रेष्ठ एवं आदर्श कर्त्तव्यबोध से लोक के मंत्री लाभान्वित हो सकेंगे। विषम परिस्थितियों में नायक/राष्ट्र को किस प्रकार सुरक्षित किया जाये, किस प्रकार नायक/राजा/ राष्ट्र की विजय सुनिश्चित की जाये; इन भावों से वर्तमान के मंत्रियों को उनके कर्त्तव्यों, दायित्वों इत्यादि पर नवीन दृष्टि प्राप्त हो सकेंगी। वे इन आदर्श चरित्रों से शिक्षा ग्रहण कर अपनी नैतिक, चारित्रिक उन्नति कर सकेंगे। जिसकी वर्तमान परिस्थितियों में महती आवश्यकता हैं।

सन्दर्भ सूची

1. द्वितीयोऽङ्क पृ. 58 प्रारम्भिकः (ततः प्रविशत्युपविष्टः सचिन्तो माल्यवान्)
2. 6/2 – उत्पत्त्यैव हि राघवः किमपि तद्भूतं जगत्यद्भुतं
   मर्त्यत्वेन किमस्य यस्य चरितं देवासुरैर्गीयते।
   7/2 – निसर्गेण स धर्मस्य गोप्ता धर्मद्रुहो वयम्।
   अर्थ्यो विरोधः शक्तेन जातो नः प्रतियोगिना।।

3. 8/2 – तन्नामास्तु दुरासदेन तपसा दीप्तस्य दीप्तश्रियः
पौलस्त्यस्य जगत्पतेरपि कथं जाता हृदि न्यूनता।।
4. 9/2 – उत्कर्शं च परस्य मानयशसोर्विस्त्रंसनं चात्मनः
स्त्रीरत्नं च जगत्पतिर्दषमुखो दृप्तः कथं मृश्यते।।
5. 10/2 – ब्राह्मणातिक्रमत्यागो भवतामेव भूतये।
जामदग्न्यष्च वो मित्रमन्यथा दुर्मनायते।।
6. 11/2 – व्यपदिषति नः षैवप्रीत्या कथंचिदनास्थया
प्रभुरिव पुनः कार्ये कार्ये भवत्यतिकर्कषः।।
7. 12/2 – यदि प्रपद्येत धनुःप्रमाथौ षिष्यस्य शंभोर्न तितिक्षते सः।
आयोधने चेदुभयोनिघासः संरम्भयोगादति हि प्रियं नः।।
8. द्वितीयोऽङ्क पृ. 68 – तदैव रावणपराक्रान्तिनिभृततूर्या देवाः प्रसह्यैनमधिकुर्युः।
9. 13/2 – तस्मिन्नप्युपनीतयुक्तदमनः स्यादुज्झितास्मद्भयः
सामर्थ्ये सति धर्मसौम्यचरितो विश्वस्य रामः पतिः।।
10. द्वितीयोऽङ्क पृ. 69 माल्यवान् – परषुरामोत्तेजनं कर्तव्यमिति।
11. चतुर्थोङ्क पृ. 143 माल्यवान – दृष्टस्त्वया दिवौकसामेकायनीभावः यदिन्द्रादयः स्वतो बन्दित्वमुपागताः।
12. वहीं पृ. 143 माल्यवान – या सा राज्ञा दशरथेन प्राक्प्रतिश्रुतवरद्वया राज्ञो भरत माता कैकेयी, तया मन्थरा नाम, परिचारिका दशरथस्थ वार्ताहारिणी मिथिलामयोध्यातः प्रेशिता मिथिलोपकण्ठे वर्तत इति संप्रत्येव मम निवेदितं चारैः। तस्यास्त्वया षरीरमाविष्यैवमेवं च कर्तव्यम्।
13. वहीं पृ. 144–145 माल्यवान् – ते हि शक्ताः लुप्तप्रभुषक्तेरुत्साहषक्तिं छद्मनातिसन्धातुम्। अनिवर्तनीयष्च रावणस्य सीतास्वीकारग्रहः। स चौवमीषत्करः सप्रयोजनश्चेति।
14. 2/4 – वीरोऽस्त्रपारगष्चिन्त्यो यथा रामस्तथैव सः।
छद्मदण्डप्रयोगस्तु यथैकस्मिंस्तथा द्वयोः।।
15. वहीं पृ. 147 3/4,4/4 माल्यवान् – पाल्यं तस्य जगद्वयं तु जगतो नित्यं हठादेषिनः–
3/4 – सामैत्रं सति कोद्दगप्रियकृता शश्वद्विरुद्धात्मना।
कानर्थान् रघुनन्दनो मृगयते देवैः पतिर्यो वृत–
स्तस्माद्दानमपीह नास्ति न भिदा तस्यैव नः साधनम्।।
4/4 – दण्डोऽप्यभ्यधिके शत्रौ न प्रकाषः प्रषस्यते।
तूश्णींदण्डस्तु कर्तव्यस्तस्य चायमुपक्रमः।।
16. 6/4 – उत्तिष्ठेत वधाय नः परिभवप्रेद्धेन चेन्मन्युना नेष्टे तत्प्रसरं निरोद्धुमुदधिस्तिग्मांशुवीर्यो हि सः।
किन्तु प्राक्प्रतिपन्नरावणसुहृद्भावेन भीमौजसा षत्रुवज्रवरात्मजेन हरिणा घोरेण घानिश्यते।।
17. 7/4 – क्षितेरानन्तर्यादपकृदपकृत्यश्च सततं द्विधा रामः शत्रुः प्रकृतिनियतः क्षत्रिय इति।
तृतीये मे नप्ता रजनिचरनाथस्य सहजो रिपुः प्रत्यासत्तेरहिरिव भयं नो जनयति।।
18. चतुर्थोङ्क पृ. 150–151 खरदूशणप्रभृतयस्तु संघवृत्तयो राजानमुपतिश्ठनते, यतस्तेन वत्सेनेव राजानमर्थान्दुहन्ति। उपजापिताष्च प्रत्युपजपन्ति प्रकृतयः। तदिदमन्तर्भेदजर्जरं राजकुलमभियुक्तमात्रं रामेण भिद्यते।.....
19. वहीं पृ. 151 तत्र विभीशणावग्रहस्य प्रतिविधानं कर्तव्यम्। स तु प्रकाषदण्डस्तूष्णींदण्डः संरोधनमपसारणं वा स्यात्।
20. वहीं पृ. 153 माल्यवान् – ईदृशः खलु कुलपुत्रकाचारः।
21. वहीं पृ. 153 माल्यवान् – प्राज्ञः खल्वसाववेक्षितविकारः स्वयमेवापसर्पेत्, उपेक्षणीयस्तवमस्माभिः। न चौवं

मन्तव्यमौरसाद्भयमिति। यत्रू–

9/4 – बाल्यात्प्रभृत्येव निरूढसख्यं सुग्रीवमेष ध्रुवमाश्रयेत्।
बालिप्रसादीकृतभूमिभागे कुमारभुक्तौ स्थितमृमूष्यके।।

22. 10/4 माल्यवान् – यो बालिनं हन्ति हता बयं च तेन ध्रुवं तत्र तु सर्वनाशे।
एकः सजीव्यात्कुलतन्तुरस्मै रामः श्रियं धर्ममयो ददातु।।

23. चतुर्थोङ्क पृ. 155 माल्यवान् – हा हा वत्सविभीशण त्वमपि मे कार्येण हेयः स्थितः।12/4

24. 1/6 – यस्य विदेहराजतनयायाच्याङ्कुरोऽपि स्वसुर्यात्रा तौ परिवञ्चितुं किसलयं मारीचमायाविधिः।
षाखाजालमयोनिजापहरणं तस्य स्रुटं कोरकाः कीशाधीषवघोऽनुजस्य गमनं सख्यं तयोस्तेन च।।

25. षष्ठोऽङ्क प्रारम्भिकः 1/6 के बाद का संवाद – अयमचिरादेव फलोन्मुखोऽपि भवितेति मन्ये। यतो वृद्धबुद्धिरनागतं पष्यति। (निःष्वस्य) अहो वामता भागधेयानाम्!

26. 2/6– व्यसनेऽस्मिन मन्त्रषक्त्या यद्यत्प्रतिकृतं मया
अलसस्य यथा कार्यं तत्तत्प्रच्युतमात्मना।। (सानुतापम्) – साचिव्यं नाम महते संतापाय।

27. 3/6 – यत्किंचिद् दुर्मदाः स्वैरमाद्रियन्ते निरर्गलम्।
तत्र तत्र प्रतीकारष्चिन्त्यो वक्रे विधावपि।।

28. षष्ठोऽङ्क पृ. 247 माल्यवान् – (सखेदम्) किं नाम दग्धं नगरम्। हतोऽक्षः कुमारः। अपि को नामायं कपिः स्यात्। (सस्मरणम्) उक्तं च चारकेण हनूमानवाचीं दिशामिति। अहह!

5/6 – तूलदाहं पुरं लङ्का दहतैव हनूमता।
अपि लङ्कापतेस्तीव्रः प्रतापो निरवाप्यत।।

29. वहीं पृं. 248 त्रिजटा – कनिश्ठमातामह! पुरत एव कोऽपि मर्कटपरमाणुस्तया समं मन्त्रयमाणो दृष्टः।...
माल्यवान् – किं न पर्याप्तं। (साशङ्कम्) एतेनैव कपिपरमाणुना तावदेवमनुष्ठितम्। एवं परःशताः कोट्यः श्रूयन्ते सम्प्रति सुग्रीवभुजबलपरिपालिते कपिसर्गे।

30. 6/6 माल्यवान् – वत्से! युज्यतेऽपि।
पतिव्रतामयं ज्योतिः षान्तं दीपं च घुश्यते।
(विमृष्य) अथवा। किं नाम सा वराकी।
दुश्कर्मणां परीपाकः स्वयमेवैष दीप्यते।।

31. 7/6 दुर्गोऽयं चित्रकूटस्तदुपरी नगरं सप्तधातुप्रकारप्राकारं दुस्तरैषा निरवधिपरिखाप्यब्धिरभ्रङ्कषोर्मिः।
दोर्दण्डा एव दृष्यद्रिपुदलनमहासत्रदीक्षाः प्रतीक्ष्या रक्षोनाथस्य किं नो विधिरिह वचनेऽप्यक्षमो दुविपाकः।।

32. वहीं पृ. 251 माल्यवान् – विमृष्यमाने तु दिश्टया कनिश्ठवत्स एव दूरदर्षी यस्याविमृष्यकारितापि षुभोदर्का.....

33. 8/6 न कुत्राप्यन्यत्र प्रबलभवितव्यादयमहो विषुद्धेवोत्पत्त्या पतति न च तत्पापधिषणा।
यथा स्वैरं भ्राम्यन्निरवधि वियत्यस्तशिखरं व्युदस्यायं भास्वांस्तदनुगतघस्त्रार्चिरपि सा।।

34. षष्ठोऽङ्क पृ.सं. 253 माल्यवान् – वत्से ! स्त्रीत्वेऽपि वरं सा खलु देवी मन्दोदरी यन्मतिप्रतिबोधनायोत्ताम्यति। न पुनर्देवो यः प्रतिबोधितोऽद्यापि न बुध्यते।

35. बालरामायण 2/6

36. अनर्घराघवम्

37. द्वितीयोऽङ्क पृ. 104 सुमन्त्रः– भगवन्तौ वशिष्ठविश्वामित्रौ भवतः सभार्गवानाह्वयतः।

****